



पशुधन संकल्प

e - Magazine

Available online at
<https://psem.vitalbiotech.org>

Article ID: PS/26/03

अत्यधिक गर्मियों में रखें पशुओं का विशेष ध्यान



डॉ. दीपक कुमार चौरसिया

पशु चिकित्सा स्त्री रोग और प्रसूति विज्ञान, शिक्षा 'ओ' अनुसंधान यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर, ओडिशा

परिचय

गर्मियों में पशुओं की देखभाल पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि बेहद गर्म मौसम में, जब वातावरण का तापमान 42-48°C तक पहुँच जाता है और गर्म लू के थपेड़े चलने लगते हैं तो पशु दबाव की स्थिति में आ जाते हैं। इस दबाव की स्थिति का पशुओं की पाचन प्रणाली और दूध उत्पादन क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गर्मी में पशुपालन करते समय नवजात पशुओं की देखभाल में तनिक सी भी असावधानी उनकी भविष्य की शारीरिक वृद्धि, स्वास्थ्य, रोग प्रतिरोधी क्षमता और उत्पादन क्षमता पर स्थायी कुप्रभाव डाल सकती है। पशुधन को भीषण गर्मी, लू एवं तापमान के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए एहतियात बरतने की काफी आवश्यकता होती है। गर्मी के दिनों में तेज गर्म मौसम तथा तेज गर्म हवाओं का प्रभाव पशुओं की सामान्य दिनचर्या को प्रभावित करता है। भीषण गर्मी की स्थिति में पशुधन को सुरक्षित रखने के लिए विशेष प्रबन्धन एवं उपाय करने की आवश्यकता होती है, जिनमें ठंडा एवं छायादार पशु आवास, स्वच्छ पीने का पानी आदि पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।



लेख इतिहास

Received : 17. 08.2026
 Revised : 24. 08.2026
 Accepted : 29. 08.2026



अनुरूपी लेखक

डॉ. दीपक कुमार चौरसिया *

E-mail ID:
 deepakchaurasia1947@gmail.com



Open Access

This article is published under the terms of the
[Creative Commons Attribution License 4.0.](#)

गर्मी में पशुपालन करते समय दुधारू एवं नवजात पशुओं की देखभाल की हेतु निम्नलिखित उपाय करनी चाहिये

आवास प्रबंधन:-

पशुओं के लिए आवास हेतु साफ-सुथरी व हवादार पशुशाला होनी चाहिए, पशुशाला की छत उष्मा की कुचालक हो ताकि गर्मियों में अत्यधिक गरम न हो। इसके लिए एस्बेस्ट्स सीट उपयोग में लायी जा सकती है। अधिक गर्मी के दिनों में छत पर 4 से 6 इंच मोटी घास-फूस की परत या छप्पर डाल देना चाहिए। ये परत उष्मा अवरोधक का कार्य करती है जिसके कारण पशुशाला के अन्दर का तापमान कम बना रहता है। सूर्य की रोशनी को परावर्तन करने हेतु पशुशाला की छत पर सफेद रंग करना या चमकीली एल्युमिनियम शीट लगाना भी लाभप्रद पाया गया है। पशुशाला की छत की ऊँचाई कम से कम 10 फुट होनी आवश्यक है ताकि हवा का समुचित संचार पशुशाला में हो सके तथा छत की तपन से भी पशु बच सके। पशुशाला की खिड़कियाँ व दरवाजों व अन्य खुली जगहों पर जहाँ से तेज गरम हवा आती हो, बोरी या टाट आदि टांग कर पानी का छिड़काव कर देना चाहिए। पशुशाला में पंखों का होना भी लाभप्रद होता है। अतः सम्भव हो तो उसकी भी व्यवस्था होनी चाहिए। पशुओं के आवास गृह में अधिक भीड़-भाड़ नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक पशु को उसकी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त स्थान उपलब्ध कराएं। एक वयस्क गाय व भैंस को 40 से 50 वर्गफुट स्थान की आवश्यकता होती है। मुक्त घर व्यवस्था में गाय व भैंसों को क्रमशः 35 व 40 वर्ग मीटर स्थान देना हुआ तथा 7 व 8 वर्ग मीटर खुले बाड़े के रूप में प्रति पशु उपलब्ध होना चाहिए। शीघ्र ब्याने वाले पशुओं के लिए ढका हुआ क्षेत्र 12 वर्ग मीटर व उतनी ही जगह खुले क्षेत्र के रूप में उपलब्ध करानी चाहिए। प्रजनन हेतु सांड के लिए ढका क्षेत्र 12

वर्ग मीटर व खुला क्षेत्र 120 वर्ग मीटर होना चाहिए जिससे सांड को पर्याप्त व्यायाम मिलता रहता है, जो उसकी प्रजनन क्षमता को बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है।

आहार प्रबंधन :-

गर्मियों में पशु चारा चरना कम कर देते हैं। गर्मियों में जल वायुमंडलीय तापमान पशुओं के शारीरिक तापमान से अधिक हो जाता है तो पशु सूखा चारा खाना कम कर देते हैं क्योंकि सूखा चारा को पचाने में शरीर में उष्मा का अधिक मात्रा में निकलता है। अतः पशुओं को चारा प्रातः या सांयकाल में ही उपलब्ध कराना चाहिए तथा जहां तक सम्भव हो पशुओं के आहार में हरे चारे की मात्रा अधिक रखें। गर्मी में पशुपालन करते समय पशुओं को हरे चारे की अधिक मात्रा उपलब्ध कराना के दो लाभ हैं, एक तो पशु अधिक चाव से स्वादिष्ट एवं पौष्टिक चारा खाकर अपनी उदरपूर्ति करता है, तथा दूसरा हरे चारे में 70-90 प्रतिशत तक पानी की मात्रा होती है, जो समय-समय पर जल की पूर्ति करता है। यदि पशुओं को चारागाह में ले जाते हैं तो प्रातः व सांयकाल को ही चराना चाहिए जब वायुमंडलीय तापमान कम हो। पशुपालक को चाहिए कि गर्मी के मौसम में हरे चारे के लिए मार्च, अप्रैल माह में मूंग, मक्का, काऊपी, बरबटी आदि की बुवाई कर दें जिससे गर्मी के मौसम में पशुओं को हरा चारा उपलब्ध हो सके। ऐसे पशुपालन जिनके पास सिंचित भूमि नहीं है, उन्हें समय से पहले हरी घास काटकर एवं सुखाकर तैयार कर लेना चाहिए। यह घास प्रोटीन युक्त, हल्की व पौष्टिक होती है।

पानी प्रबंधन:-

गर्मी के मौसम में पशुओं को भूख कम लगती है और प्यास अधिक। इसलिए पशुओं को पर्याप्त मात्रा में दिन में कम से कम तीन बार पानी पिलाना चाहिए। जिससे शरीर के

तापक्रम को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इसके अलावा पशु को पानी में थोड़ी मात्रा में नमक एवं आटा मिलाकर पानी पिलाना चाहिए। पीने के लिए ठंडा पानी उपलब्ध कराना चाहिए। इसके लिए पानी के टैंक पर छाया की व्यवस्था हो। पानी की पाइपों को खुली धूप से न गुजरें तथा जहां तक हो सके तो जमीन के अन्दर बिछी होनी चाहिए ताकि पानी को दिन में गर्म होने से बचाया जा सके। पशुओं को ठण्डा पानी पिलाने के लिए घड़े के पानी का उपयोग भी कर सकते हैं।

वैसे तो ग्रीष्मऋतु का प्रभाव लगभग सभी प्रकार के जानवरों पर देखा गया है, परंतु सबसे अधिक प्रभाव गाय, भैंसों पर होता है। यह भैंस के काले रंग, पसीने की कम ग्रंथियों तथा विशेष हार्मोन के प्रभाव के कारण होता है।

पशु को लू लगने के लक्षण-

पशुओं का आहार लेने में अरुचि दिखाना, दुधारू पशुओं के दुग्ध उत्पादन में कमी होना, नाक से खून बहना एवं पतला दस्त होना, आंख व नाक लाल होना, एवं हृदय की धड़कन का तेज होना, पशुओं का गहरी सांस लेना व हाफने लगना, मुंह से जीभ बाहर निकलना, अंतिम अवस्था में श्वास कमजोर पड़ जाना, पशु की अत्याधिक लार बहना, मुंह के आसपास झाग आ जाना, पशु बेचौनी दिखाता है, छाया ढूंढता है तथा बैठता नहीं है।

प्रजनन क्रिया क्षीण मंद हो जाना— इस मौसम में भैंसों व संकर नस्ल गायों की प्रजनन क्षमता मंद हो जाती है तथा मदचक्र लम्बा हो जाता है एवं मद अवस्था का काल व उग्रता दोनों बढ़ जाती है। जिसके कारण पशुओं में गर्भधारण की संभावना काफी घट जाती है

गाय, भैंसों के दूध में वसा तथा प्रोटीन की मात्रा कम हो जाती है, जिससे दूध की गुणवत्ता प्रभावित होती है। मादा में भ्रूणीय मृत्यु दर का बढ़ जाना, पशु का व्यवहार असामान्य हो जाना, नर पशु की प्रजनन क्षमता का घट

जाना, नर पशु से प्राप्त वीर्य में शुक्राणु मृत्यु दर अधिक होना, नर व मादा पशु की परिपक्वता अवधि बढ़ जाती है, बच्चों की अल्प आयु में मृत्यु दर बढ़ जाना, बीमार पशु की उचित देखभाल न होने के कारण उसकी मृत्यु हो जाना।

पशु को लू लगने से बचाव –

लू से पशुओं को बचाने के लिए कुछ सावधानियां बरतनी चाहिये—

डेयरी को इस प्रकार बनाएं की सभी जानवरों के लिए उचित स्थान हो ताकि हवा को आने जाने के लिए जगह मिले। सीधे तेज धूप और लू से पशुओं को बचाने के लिए पशुशाला के मुख्य द्वार पर खस या जूट के बोरे का पर्दा लगाना चाहिये। मवेशियों को गर्मी से बचाने के लिए पशुपालक उनके आवास में पंखे, कूलर और फव्वारा सिस्टम लगा सकते हैं। पंखों या फव्वारे के द्वारा पशुशाला का तापमान लगभग 15 डिग्री फेरनाइट तक कम किया जा सकता है। पशुशाला के आसपास छायादार वृक्षों की मौजूदगी पशुशाला के तापमान को कम रखने में सहायक होती है। पशुओं को छायादार स्थान पर बाँधना चाहिये। दिन के समय में उन्हें अन्दरबांध कर रखें। पर्याप्त मात्रा में साफ सुथरा ताजा पीने का पानी हमेशा उपलब्ध होना चाहिये। पीने के पानी को छाया में रखना चाहिये। पशुओं से दूध निकालने के बाद उन्हें यदि संभव हो सके तो ठंडा पानी पिलाना चाहिये। पशुशाला में यदि पशुसंख्या अधिक हो तो पानी की कम से कम 2 जगह व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे पशु को पानी पीने में असुविधा न हो। सामान्यतः पशु को 3–5 लीटर पानी की आवश्यकता प्रति घंटे होती है। इसे पूरा करने के लिये पशु को पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाना चाहिए। पानी व पानी की नांद सदैव साफ होना चाहिए। तथा पानी का तापमान 70–80 डिग्री फेरनाइट होना चाहिए, जिसको पशु अधिक पसंद करता है। खाने –

पीने की नांद को नियमित अंतराल पर चूना से सफाई करते रहना चाहिये। रसोई की जूठन और बासी खाना पशुओं को कतई नहीं खिलाना चाहिये। कार्बोहाइड्रेट की अधिकता वाले खाद्य पदार्थ जैसे: आटा, रोटी, चावल आदि पशुओं को नहीं खिलाना चाहिये। पशुओं के संतुलित आहार में दाना एवं चारे का अनुपात 40 और 60 का रखना चाहिये। गर्मियों के मौसम में पैदा की गयी ज्वार में जहरीला पदार्थ हो सकता है जो पशुओं के लिए हानिकारक होता है। अतः इस मौसम में यदि बारिश नहीं हुई है तो ज्वार खिलाने के पहले खेत में 2-3 बार पानी लगाने के बाद ही ज्वार चरी खिलाना चाहिये। पशुचारे में अम्ल घुलनशील रेशे की मात्रा 18-19 प्रतिशत से ज्यादा होनी चाहिए। इसके अलावा पशु आहार अवयव जैसे-यीष्ट (जो कि रेशा पचाने में सहायक है), फंगल कल्चर (उदा. ऐसपरजिलस ओराइजी और नाइसिन) जो ऊर्जा बढ़ाते हैं देना चाहिये। चूंकि पशु का दाना ग्रहण करने की क्षमता घट जाती है, अतः पशु के खाद्य पदार्थ में वसा, ऊर्जा बढ़ाने का अच्छा स्रोत है, इसकी पूर्ति के लिए पशु को तेल युक्त खाद्य पदार्थ जैसे सरसों की खली, बिनौला, सोयाबीन की खली, या अलग से तेल या घी आदि पशु को खिलाना चाहिए। पशु आहार में वसा की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत तक पशु को

खिलाये गये शुष्क पदार्थों में होती है। इसके अलावा 3-4 प्रतिशत पशु को अलग से खिलानी चाहिए। कुल मिलाकर पशु को 7-8 प्रतिशत से अधिक वसा नहीं खिलानी चाहिए।

पशुओं का इस मौसम में गलाघोंटू, खुरपका मुंहपका, लंगड़ी बुखार आदि बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण जरूर कराना चाहिये जिससे वे आगे आने वाली बरसात में इन बीमारियों से बचे रहें। गर्मी के दिनों में पशु को दाने के रूप में प्रोटीन की मात्रा 18 प्रतिशत तक दुग्ध उत्पादन करने वाले पशु को खिलानी चाहिए। यह मात्रा अधिक होने पर अतिरिक्त प्रोटीन पशु के पसीने व मूत्र द्वारा बाहर निकल जाती है। पशु को कैल्शियम की पूर्ति के लिये लाईम स्टोन चूना पत्थर की मात्रा भी कैल्शियम के रूप में देना चाहिए। जिससे पशु का दुग्ध उत्पादन सामान्य रहता है। लू की चपेट में आने पर पशु को तुरंत चिकित्सक को दिखाएं, इन उपायों और निर्देशों को अपना कर दुधारु पशुओं की देखभाल एवं नवजात पशुओं की देखभाल उचित तरीके से की जा सकती है और गर्मी के प्रकोप और बीमारियों से बचाया जा सकता है तथा उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।